पुष्पा सिन्हा

थोड़ी रोशनी उधर भी

ई-मेल-pushpasinha167@gmail.com

इस दिवाली की शाम मैं दिया, बाती और मिठाई खरीदने अपनी धुन में नजरें गड़ाये चली जा रही थी। पर, फिर कुछ क्षणों बाद मैंने चारों तरफ नजरें फेरी,तो पाया कि एक तरफ दिवाली की खरीदारी की चकाचौंध है, तो दूसरी तरफ हाथ पसारे भीख माँगते कुछ लोग हैं। यह देखकर मेरा मन विदीर्ण हो गया और सोचने लगी कि, "अहा रे! यह यह कैसी दिवाली है कि एक तरफ तो चकाचौंध है और दूसरी तरफ घनघोर अंधेरा! मन ही मन सोचने लगी कि हे राम, यह तुम्हारी कैसी माया है। काश! सभी के लिए रोशन हो उठे, इस अमावस की रात।

खैर, मन में कसक लिए मैं अपनी दिवाली की खरीदारी पूरी कर जब मिठाई की दूकान से निकल रही थी, तभी पाया कि मुझसे एक बच्ची हाथ पसारे दिवाली के लिए मिठाई माँग रही है। पहले तो थोड़ी झुंझलाहट हुई कि नाहक यह बच्ची मुझे तंग कर रही है। मैं क्यों दूं इसे इतनी महंगी मिठाई। अतः अभी कुछ क्षण आगे ही बढ़ी थी कि दिल में करुणा की एक लहर जागी और सोचने लगी कि कितना खर्च हो जाएगा मेरा, यदि मैं इसे मिठाई की एक छोटी-सी पैकेट खरीद कर दे दूँ। सागर में एक बूँद जैसा, बस। पर, सागर का अस्तित्व एक बूँद से ही तो है।

फिर, मैं पीछे चलकर उस बच्ची तक पहुँची और मिठाई का एक छोटा डब्बा खरीदकर उसके हाथों में दे दिया।

तब उसकी इठलाती चाल देखकर मुझे ऐसा लगा कि सच! यह दिवाली मेरे लिए जगमग हो उठी क्योंकि थोड़ी रोशनी उधर भी थी।

सुधा गोयल

पगड़ी

ई-मेल-:sudhagoyal0404@gmail.com

पिता की मृत्यु के बाद सारे संस्कार ठीक-ठाक निबट गए। इत्तफाक ही रहा कि उद्दीप्त एक महीने की छुट्टी पर अमेरिका से यहाँ आया हुआ था। माँ तो दो साल पहले ही चली गई थी। माँ के बाद अभी आना हुआ था। पिताजी छोटे भाई प्रदीप के साथ रहते थे। वह जब भी आता पिताजी से जिद्द करता कि एक बार तो अमेरिका घूम लो, लेकिन पिताजी कभी भी अपना देश छोड़कर जाने के लिए तैयार नहीं हुए।

आज तेरहवीं है। सभी रिश्तेदार अन्तिम बिदाई के लिए जुटे हैं। ब्रह्मभोज और हवन भी सम्पन्न हो गया है। पंडित जी प्रवचन कर रहे हैं और सब शांत भाव से सुन रहे हैं।

प्रवचन समाप्त हुए तो पंडित जी ने पगड़ी संस्कार की घोषणा की। तभी उद्दीप्त ने सभी रिश्तेदारों के सामने खड़े होकर हाथ जोड़कर कहा—"मेरे पिताजी अपने पीछे कोई जिम्मेदारी नहीं छोड़ गए हैं। हम दोनो भाई अपना अपना परिवार यानि अपनी-अपनी जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। अतः पगड़ी का कोई औचित्य नहीं है। मैं इसकी कोई आवश्यकता नहीं समझता। सामाजिक जिम्मेदारी निभाना हमारा कर्तव्य है और हम दोनो भाई मन, कर्म और वचन से निभाएँगे।"

पहले तो लोग कुछ समझे ही नहीं। पंडित जी को भी थोड़ा अजीब लगा, लेकिन नई हवा और चलन को वे भी समझ गये। उन्होंने कहा—"जैसे यजमान की इच्छा।" कहकर हाथ जोड़कर वे उठ गये। उनके साथ सभी रिश्तेदार उठ गये।